Read report on Summer POP: Green Gram

गरमा **पी.ओ.पी.**

फसल का नाम: मुंग (Vigna radiata L. Wildzek.)

मुंग की खेती- 25 डिसमिल जमीन के लिए

मुंग की खेती से होने वाले लाभ:

- मुंग गरमा मौसम में उगने वाली एक प्रमुख दलहन फसल है ।
- इसकी खेती मुख्य फसल के रूप पुरे खेत में लगाया जाता है
- 100 ग्राम मुंग कि दाल से 63.4 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 24.6 ग्राम प्रोटीन प्राप्त होता है | यह पोटासियम, मेगनेसियम एंड कैल्शियम का अच्छा श्रोत है |
- मुंग दलहन की फसल है । इस के जड़ में मौजूद राइजोबियम वायु मंडल से 40-50 किलो नाइट्रोजन अवशोषित करता है एवं सड़ने के बाद खाद के रूप में परिवर्तित हो जाता है, जिससे नाइट्रोजन अन्य पौधों को भी प्राप्त हो पाता है | यह मिटटी की उर्बरकता बरक़रार रखती है |

खेती करने का उचित समय:

सामान्यतः इस क्षेत्र में धान कटाई के बाद मुंग की बुवाई की जाती है | गरमा फसल में मुंग की खेती केलिए 15 फरवरी से 25 फ़रवरी तक मुंग बुवाई के लिए उत्तम समय माना जाता है | बुवाई के लिए जीरो टीलेज ड्रिलर अच्छा मना जाता है |

जमीन का प्रकार:

- मुंग खेती के लिए दोमट एवं चिकना मिट्टी, जिसका pH मान 6.0 से 7.8 तक हो उत्तम मानी जाती है | जबकि 8.5 से ज्यादा pH मान बाली मिट्टी मुंग खेती के लिए उपयुक्त नहीं होता है |
- समतल या हल्की ढाल वाली जमीन भी मुंग के खेती के लिए उपयुक्त होता है ।

2. बीज उपचारएवं बीज संसोधन:-

उद्देश्य:- बीज जनित रोग से बचाव के लिए एवं मिट्टी में उपस्थित फफूंद से पोधों को बचाव के लिए |

तरीका या विधि:-

- मिट्टी एवं बीज जनित रोगों से बचाव के लिए बीज को थिरम, बेविस्टीन या कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम/लीटर पानी में मिला कर उपचार करना चाहिए |

❖ **राइजोबियम (RHIZOBIUM) एवं पी.एस.बी. (PSB) कल्चर से बीज का संसोधन/लेपन विधि:**

उद्देश्य:-

- पौधों को वायुमंडल से नाइट्रोजन प्राप्त होता है | इससे रासायनिक खाद की बचत होती है एवं उपज में 15% से 20% तक की बृद्धि होती है |
- दलहन फसलों के बाद अन्य फसलों को भी पोषण प्राप्त हो पाता है।
- इसके माध्यम से 30 से 40 किलोग्राम नाइट्रोजन प्रति हेक्टर प्राप्त होता है, जो 65 से 90 किलोग्राम यूरिया के बराबर होता है |
- PSB मिट्टी में मौजूद फोस्फोरस को घुलनशील बना कर पौधों को उपलब्ध करवाने में मदद करता है |

लेपन की विधि :-

- 20 किलो मुंग के बीज के लिए 100 ग्राम राइजोबियम कल्चर पर्याप्त होता है |
- घोल को तैयार करने के लिए 100 ग्राम गुड को 1 लीटर पानी में तब तक उबलना चाहिए जब तक पानी में तार जैसा बनना ना शुरू हो जाये | इसके बाद घोल को ठण्डा होने के लिए छोड़ देना चाहिए|
- ठण्डा होने के बाद राइजोबियम एवं PSB कल्चर को घोल में अच्छी तरह से मिला कर घोल तैयार करना चाहिए |
- इस तैयार घोल में बिज को डाल कर अच्छे से तब तक मिलाना चाहिए, जब तक की सभी बीज पर अच्छे से लेपन ना हो जाये |
- उपचारित बीज को छाया में ही सुखाना चाहिए, एवं अगले दिन बुवाई करना चाहिए |

3. लगाने की विधि एवं बीज दर:-

- **25 डिसमिल** जमीन में **4-6 किलो** मुंग का बीज पर्याप्त होता है | लाइन से बुवाई करते समय कतार से कतार की दुरी- 1.0 फीट एवं पौधा से पौधा की दुरी 2 इंच रखनी चाहिए | बुवाई में देर होने से बीज की मात्रा 6-8 किलो करना होगा |

रोग का नाम	रोग का लक्षण	उपचार विधि
Yellow Mosaic Virus (पिला पत्ता रोग) 	• यह एक विषाणु जनित रोग है। जो पौधे के छोटी अबस्था रस चूषक कीट के द्वारा फैलता है। इस रोग में पत्ता पीला होकर सुख जाता हे। • इस रोग में पौधों में फलन नहीं हो पाता है। • यह रोग सफ़ेद मख्खी के कारण फैलता है	यह रोग नजर आने पर रोगग्रस्त पौधों को उखर कर जमीन में गाड़ देना या जला देना चाहिए। सफ़ेद मख्खी से बचाव के लिए रासायनिक दवा के रूप में ट्रेजोफोस 40 EC या मेलाथियान 50 EC 2ML/लीटर के हिसाब से 10 दिन के अंतराल पर छिड़काब करना चाहिए। जैविक में निमास्त्र, अग्निअस्त्र या हांड़ी कथ 40 ML/लीटर पानी में मिला कर 10 दिन के अंतराल में डालना चाहिए।
लीफ कर्ल (पत्ती सिकुरण रोग) 	• यह एक विषाणु जनित रोग है। जो पौधे के छोटी अबस्था रस चूषक कीट के द्वारा फैलता है। इस रोग में पत्ता पीला होकर सुख जाता हे। • इस रोग में पौधों में फलन नहीं हो पाता है। • यह रोग लाही के कारण फैलता है	यह रोग नजर आने पर रोगग्रस्त पौधों को उखर कर जमीन में गाड़ देना या जला देना चाहिए। जैविक में निमास्त्र, अग्निअस्त्र या हांड़ी कथ 40 ML/लीटर पानी में मिला कर 10 दिन के अंतराल में डालना चाहिए।

कीट प्रबंधन:

कीट का नाम	कीट का प्रकोप	रोकथाम
फली एवं तना छेदक कीट (POD BORER)	इस कीट से मुंग के फसलो	इस क्षति को नियंत्रण हेतु

Revision #1

Created 29 January 2024 21:10:59 by Pooja Thyagi

Updated 29 January 2024 21:13:44 by Pooja Thyagi